

श्री लक्ष्मी व्रत

*** श्री लक्ष्मी व्रत करते समय ध्यान दें ***

- ❖ यह व्रत धन, सम्मान, कीर्ति प्राप्ति के लिए और श्री लक्ष्मी की कृपा प्राप्ति के लिए किया जाता है। व्रत पालन करने वाली स्त्री को तन से शुद्ध और मन से आनंदित रहना चाहिए।
- ❖ व्रत को प्रारंभ मार्गशीर्ष माह के प्रथम गुरुवार को किया जाय, अंतिम गुरुवार को समाप्ति की जाए। पूजा- पाठ विधि के अनुसार हर गुरुवार को श्री लक्ष्मी व्रत किया जाय। पूरे साल तक हर गुरुवार को अपने ईष्ट देव या देवता के सामने बैठ कर श्री लक्ष्मी व्रत की कथा पढ़ें एवं श्री लक्ष्मी महात्म्य पढ़ें या सुनें।
- ❖ व्रत के दिन कुछ न खाएं, निराहारी रहें। रात को अपने परिवार के साथ मिष्ठान का भोजन करें।
- ❖ गुरुवार के दिन श्री लक्ष्मी की पूजा करते समय और कहानी महात्म्य पढ़ते या सुनते समय मन से नितांत आनंदित रहना आवश्यक है।
- ❖ व्रत के दिन परिवार के सभी लोगों को प्रसन्नचित रहना आवश्यक है।
- ❖ जब किसी कारण स्वयं को व्रत करने में कुछ असमर्थता रहेगी तो अन्य किसी भावुक व्यक्ति के द्वारा वह पूर्ण करें।
- ❖ अन्य किसी अनशन के कारणवश यह गुरुवार व्रत बीच में आ जाए तो गुरुवार व्रत करने में कुछ भी बाधा नहीं, सिर्फ रात को भोजन नहीं करना, लेकिन पूजा पाठ करें।
- ❖ इस पोथी के पठन और श्रवण का लाभ पड़ोसी, रिश्तेदार, मित्र उठा सकते हैं। पोथी के पठन- श्रवण से व्रत का पुण्य लाभ होता है यह बात ध्यान में रखें।
- ❖ मार्गशीर्ष मास के अंतिम गुरुवार को यानी समाप्ति के दिन सात कुंवरी या सौभाग्यवती स्त्रियों को निमंत्रण देकर घर बुलाएं। उनके आने पर उन्हें हल्दी- कुमकुम का सौभाग्य अलंकार लगाएं। पूजा- आरती के बाद प्रसाद के नाते एक फल या इस पोथी की एक प्रत हर एक को भेंट देकर प्रणाम करें। यह है इस व्रत की समाप्ति।
- ❖ व्रत को प्रारंभ मार्गशीर्ष मास के प्रथम गुरुवार को ही करें। लेकिन किसी कारण वश रुकावट आ जाए तो किसी भी महीने के प्रथम गुरुवार को ही प्रारंभ करें समाप्ति सिर्फ मार्गशीर्ष मास के अंतिम गुरुवार को ही करना नितांत आवश्यक है।
- ❖ लक्ष्मी - धन - संपत्ति प्राप्ति के लिए पुरुष भक्तों को इस पोथी में से " श्री लक्ष्मी महात्म्य " का पाठ करना आवश्यक है।

।। ॐ श्री लक्ष्मी देव्यै नमः ।।

श्री लक्ष्मी की पूजा - पाठ पद्धति, स्थापना एवं विसर्जन [समाप्ति]

- ❖ अपने निवास के एक साफ सुथरे जगह पर गोबर का लेपन करें। जगह फर्श बंद हो तो उसे गीले कपड़े से पोंछ कर साफ सुथरी करें। ऐसे जगह पर स्वस्तिक चिन्ह के रंगावली का रेखाटन करके उस पर चौरंग या लकड़ी का पाट रखें। पाट के चारों तरफ से ही रंगोली करें। पाठ के मध्य कुछ चावल या गेहूं चक्राकार रखें। उनपर हल्दी कुमकुम लगाएं।
- ❖ स्वच्छ जल भरे हुए ताम्र कलश में दूर्वा, कसैली (सुपरी), सिक्का छोड़ें। कलश के मुंह पर पांच जाती के पांच पेड़ों की टहनियां या पांच जाती के पांच पेड़ों के पांच पत्ते रखकर उनपर एक नारियल भी रखें। यही नारियल पाठ समाप्ति के समय तक लेना है।
- ❖ कलश के बाहरी बाजू पर हल्दी कुमकुम का स्वस्तिक बनाएं। इस प्रकार से सजाए हुए कलश को पाट पर फैलाए हुए चावल या गेहूं के चक्राकार मध्य में रखें। इस पुस्तिका में श्री लक्ष्मी का चित्र यंत्र - मंत्र के साथ छपवाया है। वह आहिस्ते से निकाल कर कार्ड - बोर्ड पर चिपकाएं या फ्रेम में बिठाएं। यह तस्वीर कलश को आधार देकर सामने रखें। पास ही सवा रुपया सिक्के के रूप में रखें। समाप्ति तक यही सवा रुपया पूजा विधि के समय लेना आवश्यक है। समाप्ति के बाद यही सवा रुपया अपने नीजी कोष में रखें।
- ❖ इसके बाद जल का आचमन करें। लक्ष्मी की पंचोपचार पूजा करें। १) स्नान २) हल्दी- कुमकुम लगाएं ३) फूल चढ़ाएं ४) धूप - दीप - अगरवती लगाकर प्रणाम करें ५) नैवेद्य अर्पण करें यह है पंचोपचार पूजा।
- ❖ श्री लक्ष्मी को स्नान कराते समय तस्वीर को खराब न करें। दूर्वा या तुलसी पत्र से तस्वीर पर कुछ जल सिंचन हल्के - हल्के करें।
- ❖ प्रसाद के तौर पर केले या अन्य फल रखें। साथ साथ दूध भी आवश्यक रखें।
- ❖ सामने पाट पर बैठ कर 'श्री लक्ष्मी व्रत' कहानी पढ़ें उसके बाद 'श्री लक्ष्मी महात्म्य' पढ़ें या पढ़ने वाले से श्रवण करते रहें।
- ❖ नैवेद्य को अर्पण कर के लक्ष्मी के सामने हाथ जोड़कर बैठें और इस पोथी में दिए गए 'श्री लक्ष्मी नमनाष्टक' पढ़ें इसके अनंतर अपने मन की इच्छा देवी के सामने प्रकट करें वह पूर्ण करने के लिए प्रार्थना करें। इसके बाद आरती करके धूप- दीप अर्चना करके देवी को साष्टांग वंदन करें।
- ❖ रात को फिर श्री लक्ष्मी की पंचोपचार पूजा करके मिष्ठान का महा नैवेद्य देवी को अर्पण करें। गाय के लिए नैवेद्य का एक पान अलग रखें। इसके बाद सभी परिवार के लोग आनंद से भोजन का लाभ उठाएं।
- ❖ दूसरे दिन सुबह स्नान के बाद ताम्र कलश में रखी हुई टहनियां या पत्ते निवास के पांच विविध जगह पर रखें। कलश में रखा हुआ जल समुद्र, नदी, तालाब या तुलसी वृंदावन में छोड़ दें और पूजा स्थल पर हल्दी कुमकुम लगाकर लक्ष्मी का स्मरण करके वंदन करें। टहनियां निर्माल्या में रखें।
- ❖ यह व्रत पूर्ण करने वालों को " मैं सुखी करूंगी" यह बात खुद श्री लक्ष्मी ने पद्म पुराण में कथन की है।
- ❖ पूजा की समाप्ति- विसर्जन के उपरांत ताम्र कलश में रखा हुआ पैसा, कसैली, ताम्र कलश पर रखा हुआ नारियल व पहले दिन से इकट्ठा किया हुआ सारा निर्माल्या समुद्र, सरिता या तालाब के बहते हुए पानी में छोड़कर वंदन करें।

।। ॐ विं श्री लक्ष्मीभ्यो नमः ।।

श्री लक्ष्मी व्रत की कथा

(वृहस्पतिवार की कहानी)

सुनिए । सुनिए। भावुक भक्तजनों सुनिए, श्री लक्ष्मी व्रत की कहानी। गुरुवार की वृहस्पतिवार की कहानी। यह कहानी श्रवण करके क्या लाभ होता है? दुःख दारिद्र्य नष्ट हो जाता है। श्री लक्ष्मी की कृपा होती है। धनदौलत प्राप्त होती है। संतति दीर्घायुषी होती है। मन की मनोकामना पूर्ण होती है।

श्री लक्ष्मी विविध रूपिणी हैं। लक्ष्मी के अनेक नाम हैं।

कैलाश में रहनेवाली पार्वती, क्षीराब्धी की सिंधु कन्या, स्वर्ग की श्री महालक्ष्मी, भूलोक में रहनेवाली लक्ष्मी, ब्रह्मलोक की सावित्री, गो लोक की रधिका, वृंदावन में रहनेवाली रशेश्वरी, चंदनवन की चंद्रा, चंपक वन की विरजा, पद्मवन कि पद्मावती, मालती वन की मालती, कुंदवन की कुंददंती, केतकी वन की सुशीला, कदंब वन की कदंबमाला, राजगृह में रहनेवाली राजलक्ष्मी और घर घर की गृहलक्ष्मी ऐसे विविध रूप से और नाम से लक्ष्मी देवी मशहूर हैं।

ऐसे श्रीमहालक्ष्मी देवी की यह है कहानी। द्वापर युग की। सौराष्ट्र देश की। वहां भद्रश्रवा नाम का एक राजा राज्य करता था। वह पराक्रमी था। चार वेद, छः शास्त्र अठारह पुरणों का ज्ञान उन्हें प्राप्त था। उनकी रानी का नाम सुरतचंद्रिका था। वह लावण्यमयी, सुलक्षणी और पतिव्रता स्त्री थीं। उस दंपति को आठ संतानें थीं। सात पुत्र और एक कन्या। कन्या का नाम था शामबाला। एक दिन श्री लक्ष्मी देवी के मन में आया कि राजा के राजगृह में जाकर निवास करें। जिस के कारण राजा अपनी प्रजा को अधिक सुख देगा। गरीब के घर में अगर मैं रहूं तो वह सारी धनसंपत्ति को खा लेगा। इसलिए लक्ष्मी ने क्या किया? वृद्धा ब्राह्मण स्त्री का रूप लिया। हाथ में आधार के लिए एक लकड़ी ले ली। और उस के जरिए सहारा लेते लेते वह सुरतचंद्रिका रानी के महल के दरवाजे में जाकर खड़ी हो गई। उसे देखकर रानी की एक सेविका सामने आ गई। उसने उस वृद्धा स्त्री से पूछताछ की। वृद्धा ने अपना नाम, पति का नाम, रहने का स्थान आदि समुचित जानकारी दे दी। वृद्धा स्त्री के रूप में लक्ष्मी माता कहने लगीं- मेरा नाम है कमला। पती का नाम है भुवनेश। हम लोग द्वारका में रहते हैं। तुम्हारी रानी पूर्व जन्म में एक वैश्य की पत्नी। वह वैश्य बहुत दरिद्री था। दर दिन उन दिनों पति- पत्नी में झगड़ा पैदा हो जाता। उसका पति उसे बहुत मारता पीटता। इस हालत से वह परेशान हो गई और घर छोड़ कर गई। बिना कुछ खाए पीए वन में घूमती रही। उसकी यह हालत देखकर मुझे उस पर दया आयी। धनसंपत्ति देने वाले श्री लक्ष्मी व्रत की कहानी मैंने उसे सुनाई। मेरे कथानुसार उसने लक्ष्मी व्रत का पालन किया। श्री लक्ष्मी देवी उससे प्रसन्न हो गई। इस कारण उसका दरिद्र्य नष्ट हो गया। संतति संपत्ति से उसका घर भर गया। आनंद हो गया। आइंदा उन दोनों का निधन हो गया। लक्ष्मी व्रत करने से दोनों लक्ष्मी लोक में वैभव में रहने लगे। जितने साल उन्होंने लक्ष्मी व्रत किया उतने हजार वर्ष उन दिनों को सौख्य प्राप्त हुआ। अभी तो उन्हें राजकुल में जन्म प्राप्त हुआ है। लेकिन रानी को अभी अपने व्रत का विस्मरण हो गया है। उसे स्मरण, याद दिलाने के लिए मैं यहां आ गई हूं। रानी की सेविका ने उनसे लक्ष्मीव्रत की जानकारी पूछी। पूजा विधि की भी जानकारी ली। वृद्धारूपधारी श्रीलक्ष्मी ने उसे लक्ष्मी व्रत की जानकारी एवं महात्म्य कथन किया। इसके बाद वह रानी की दासी उस वृद्ध स्त्री का एहसान मानकर रानी को उसका सन्देश देने के लिए चली गई।

राजवैभव में रहनेवाली रानी को अपने एश्वर्य का बहुत घमंड आ गया था। वह उन्मत्त हो गई थी। वृद्धा का सन्देश सुनकर वह यकायक गुस्से में आ गई और वृद्धा ब्राह्मण स्त्री को अपमानित किया, उसके साथ दंडेली भी की। लेकिन वह वृद्धा स्त्री साक्षात् लक्ष्मी थीं यह बात रानी को मालूम नहीं थी। रानी का उद्यम वर्तन देखकर लक्ष्मी ने वहां रहना

पसंद नहीं किया। अपने खुद के निवास में ही रहना पसंद किया। वह वहां से निकलीं। कुछ ही फासले पर उनको शामबाला मिली। उसे सारी जानकारी मिली। उसने उस वृद्धा स्त्री से क्षमा याचना की। तब लक्ष्मी को उस पर दया आई। उसने शामबाला को लक्ष्मी व्रत की जानकारी दी। वह दिन मार्गशीर्ष मास के प्रथम वृहस्पतिवार का था। शामबाला ने भाव भक्ति से लक्ष्मी व्रत का पालन किया। इसकी फलप्राप्ति यह हुई कि सिद्धेश्वर नामक राजा के मालाधार नामक पुत्र के साथ उसका विवाह सम्पन्न हुआ। उसे बड़ा वैभव प्राप्त हुआ। वह अपने पति के साथ राजवैभव में रहने लगी।

इधर लक्ष्मी कोपायमान होने के कारण राजा भद्रश्रवा और रानी सुरतचंद्रिका के राज का अस्त हुआ। वैभव - ऐश्वर्य का लोप हुआ और उनकी दशा बड़ी शोचनीय हो गई। एक दिन सुरतचंद्रिका अपने पति से बोली- " अपनी बेटी का पति राजा है। बड़ा अमीर है। उनके पास जाओ। अपनी हालत का बयान करो। उसको दया आयेगी और वह कुछ धनसम्पत्ति जरूर देगा। "

भद्रश्रवा शामबाला के पति के राज्य में गया। एक तालाब के किनारे विश्राम करने के लिए बैठ गया। इतने में शामबाला की कुछ दासियां जलकुंभ लेकर जल भरने के लिए वहां आईं। उन्होंने राजा भद्रश्रवा को देखा। उन दासियों ने उनके नाम गांव के बारे में पूछताछ की। उन्होंने सब कुछ उन्हें बतलाया। वह अपनी रानी शामबाला के पिता हैं यह बात समझने पर सभी दासियां दौड़ते दौड़ते शामबाला के पास आयीं। सारी जानकारी उसे बताई। शामबाला ने अपने पिताजी को बड़े थाटबाट के साथ अपने प्रासाद में लाया। उसका आवभगत किया। पिताजी को मिष्ठान भोजन खिलाया। उनका आदर सत्कार किया। वह जब वापस जाने को निकले तब उसने उन्हें हांडा भर धन भेंट के रूप में दिया।

भद्रश्रवा अपने घर पहुंच गया। सुरतचंद्रिका को आनंद हुआ। उसने भेंट हांडा खोला। तो अन्दर क्या था? हांडे में धन नहीं था। हांडे में कोयला भरा हुआ था। लक्ष्मी की अवकृपा से ही यह चमत्कार हो गया था।

कुछ दिन बीत गए। अब सुरतचंद्रिका अपनी लड़की के घर गयी। वह दिन था मार्गशीर्ष मास का अंतिम वृहस्पतिवार। शामबाला ने लक्ष्मी व्रत किया था। अपनी माताजी से भी यह व्रत करवाया। सुरतचंद्रिका अपने घर वापस आ गई। उसने लक्ष्मी व्रत किया था इसलिए उसे गतकाल का वैभव फिर से प्राप्त हुआ। राजऐश्वर्य फिर प्राप्त हुआ। कुछ दिन बाद शामबाला मायके में आ गयी। लेकिन अपने खुद के पिताजी को कोयले दिए और अपने को कुछ भी दिया नहीं यह गुस्सा सुरतचंद्रिका के मन में था। इसलिए शामबाला की वहां किसी ने पूछताछ भी नहीं की। उसका वहां अनादर किया गया। लेकिन शामबाला अपनी माताजी पर क्रोधित नहीं हुई। वह वहां से निकली। निकलते समय उसने वहां से कुछ नमक लिया था। निवास पहुंचने पर शामबाला से पति देव ने पूछा "मायके से क्या क्या लायी?" तब वह बोली "राज्य का तथ्यांश - सार लेकर आई हूं।" पतिदेव बोले "इसका मतलब?" उसने जवाब दिया " कुछ दिन ठहरो सारी बातें समझ में आ जाएंगी।" उस दिन उसने भोजन की सभी चीजें नमक के बिना तैयार करने के लिए हुक्म दिया। पतिदेव को भोजन परोसा। उसे भोजन के खाद्य पदार्थ नमक बीना रुचिहीन लगे। बाद में उसने भोजन थाली में कुछ नमक रख दिया। खाद्य पदार्थ में वो मिलाया तो भोजन रुचिमय लगने लगा। "यही है राज्य का सार।" शामबाला के पति को यह बात पूर्ण रूप से समझ में आ गई।

संक्षेप में। इस प्रकार से जो कोई श्रीलक्ष्मीव्रत श्रद्धायुक्त भाव से करेगा तो उसे लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होगी। सुख शांति का लाभ होगा। मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। लेकिन अमीरी प्राप्त हो जाने के बाद लक्ष्मी व्रत करना कभी न भूलें। हर वृहस्पतिवार को पोथी का पठन - श्रवण अवश्य करें। ऐसी यह लक्ष्मी व्रत की कहानी वृहस्पतिवार की कहानी सभी को सफलता प्राप्त करने वाली हो। शुभं भवतु ।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

।। ॐ श्री लक्ष्मी देव्यै नमः ।।

।। ॐ श्री लक्ष्मी माहात्म्य ।।

नमस्ते s स्तु महामाये। श्री पीठे सुरपूजिते ।।
 शंख चक्र गदाहस्ते। महालक्ष्मी नमो स्तुते।।
 ॐ श्री लक्ष्मी देव्यै नमः । ॐ श्री गणेशाय नमः।।

- ॐ नमो श्रीगजवंदना। गङ्गाया गौरीनंदना। विघ्नेशा भवभय हरणा। नमन मेरा तव साष्टांगी।।१।।
- अनन्तर वंदन श्री सरस्वती। जगन्माता भगवती। ब्रह्मकुमारी वीणावती। विद्यादात्री विश्व की।।२।।
- नमन वैसे गुरुवर्या। सुख निदान सदगुरुराया। स्मरण उस पवित्र पादां। चित्त शुद्धि हो गयी ।।३।।
- महान ऋषिमुनी संतजन। बुध गण और सज्जन। करते तुम्हें नमन। प्रार्थित से मिलिंद माधव।।४।।
- सुनो सुनो भक्तजन हो। कथन करें यह लक्ष्मी व्रत हो। उस पालनसे हो प्रसन्न। लक्ष्मीमाता सबसबोंपर।।५।।
- युग में युग द्वापर श्रेष्ठ। पवित्र देश सौराष्ट्र। वहां घटित जो कहानी। वही सुनो अभी।।६।।
- उस सौराष्ट्र राज्य में। भद्रश्रवा राज्याधिकार में। वेद वेदान्त का ज्ञान उन्हें। महावीर पराक्रमी।।७।।
- सुरतचंद्रिका उसकी रानी। पतिव्रता भले सूलक्षणी। लाखों में एक रूपमती। प्रेम से रहती वह दंपती।।८।।
- आठ अपत्यों की प्राप्ति ही। एक के बाद एक सात पुत्रही । संतुष्ट से कन्या एक ही। शामबाला नाम की।।९।।
- नगर के बाहर उद्यान में। कन्या क्रीडत उद्यान में। उस समय राजगृह में चमत्कार हो गया।।१०।।
- देवी लक्ष्मी बोली मन में। अगर मैं रहूं राजगृह में। तो राजा के हस्तों से प्रजा में। सुख समृद्धि हो जाएगी।।११।।
- अगर मैं जाऊं गरीब के घर को। तो वह खाएगा सारे धन को। अन्य बेचारी प्रजा को। दारिद्र्य ही मिलेगा।।१२।।
- विचार ऐसा करके। वृद्धा स्त्री का रूप लेके। लकुटिया का आधार लेके। राजद्वार पर आगई।।१३।।
- राजगृह का एक महिला दास। दौड़ते आया उसके पास। " कौन चाहिए" पूछता। कहो कहो प्रथम मुझे।।१४।।
- तुम कौन हो। रहने का ठिकाना क्या है। यहां आने का कारण क्या है। जवाब दो अभी अभी।।१५।।
- वृद्धा रूप धारी लक्ष्मी। बोली भुवनेश ब्राह्मण मेरे स्वामी। रहते हैं हम द्वारिकापुरी। नाम खुद का कमला।।१६।।

- बोली पूर्व जन्म में तुम्हारी रानी। थी एक वैश्य की पत्नी। उन दोनों का निशिदिनी होता हमेशा अनबन।।१७।।
- था वैश्य महादरिद्री । पीटता अपनी गृहलक्ष्मी । विविधता से हैरान करे पत्नी। न दे उसे जलपानी भी।।१८।।
- इससे पत्नी परेशानी में। आयी घर से बाहर क्रोध में। भटकने लगी वन वन में। करूणा उसकी मुझे आई।।१९।।
- जाकर मैं उसके पास। पूछा कारण दुःख का खास। किया उसका दुःख सांत्वन। करके उसे उपदेश कथन।।२०।।
- जो व्रत देता है संपत्ति धन की। उस जानकारी लक्ष्मी व्रत की। कथन की मैंने उसके प्रती। पूरी पूजा विधि के साथ ही।।२१।।
- मेरे काथानुसार से। श्रद्धा और भक्ति भाव से। लक्ष्मी व्रत किया स्वहस्त से। फलतः लक्ष्मी प्रसन्न हो गई।।२२।।
- दारिद्र्य उसका नष्ट हो गया। अनबन झगड़ा बन्द हो गया। संतति- संपत्ति से घर भर गया। हो गया आनंद घर में ही।।२३।।
- आगे चलकर एक समय पर। वह दोनों गए परलोक द्वार। उनके व्रत - पुण्यमयी साथीदार । लक्ष्मी लोक में सुखी।।२४।।
- जितने साल लगाए लक्ष्मी व्रत में। उतने हजार वर्ष रहे वैभव में। रहते अभी राजकुल में। जन्म उन्हें प्राप्त हुआ।।२५।।
- सुखोपभोग और विलास नानाविध। रानी को प्राप्त हुए अगाध। प्राप्त ऐश्वर्य से भूली वह सब कुछ। विस्मरण हो गया लक्ष्मी व्रत का।।२६।।
- उसे से लक्ष्मी व्रत का स्मरण। इस सद्हेतु के कारण। हो गया मेरा आगमन। कहो तुम्हारी रानी को।।२७।।
- वृद्धा के इस कथन से ही। सचेत हो गई वह दासी। पूछने लगी वृद्धा से। लक्ष्मी व्रत की जानकारी।।२८।।
- जोड़कर दोनों कर। विनित दासी वृद्धा की ओर। लक्ष्मी व्रत की पूर्ण जानकारी।।२९।।
- वह लक्ष्मी वृद्धारूपधारी । प्रसन्न हो गई दासी के ऊपरी। व्रत की पूरी पूरी जानकारी । संक्षेप में कथन की।।३०।।
- पवित्र मास मार्गशीर्ष। ईश्वर का रहे उसमें अंश। सुयोग्य लक्ष्मी व्रत के लिए सदा। हर एक साल सर्वदा।।३१।।
- इस माह के गुरुवार को। रहो व्रतस्थ में पूजा पाठ को। स्वस्थ, शांत मन को। रहो रहो शुद्धाचरणी ।।३२।।
- जलभरे ताम्र कलश में। रखो दूर्वा, पैसा, कसैली उसमें। सजाएं हल्दी - कुमकुम की रेखाओं में। कलश को चारों ओर से।।३३।।
- टहनियां पांच पेड़ों की तोड़कर। रखो कलश के ऊपर। चावल कुछ फैलाकर। सुविधा से रखो एक पाट पर।।३४।।

- गोबर से लेपन करो ज़मीन पर। फिर बैठकर पाट को रखो ऊपर। चारों तरफ़ से रंगावली रेखा कर। सुशोभित कलश उसपरही।।३५।।
- ऐसे लक्ष्मीदेवी को करो नमन। श्री लक्ष्मीदेवी का करो पूजन। रखकर दूध, फल और मिष्ठान। नैवेद्य को अर्पण करें।।३६।।
- बाद आरती का करो अर्चन। मनोभाव से करो प्रार्थना वंदन। श्रीलक्ष्मी से करो मन प्रकटन। कामना अपने मनोमन की।।३७।।
- हे लक्ष्मी माते भगवती। यथा शक्ति यथा मती। सेवा में लग गई है सर्व शक्ति। मान्य कर के ले लो तू।।३८।।
- हम अज्ञ बालक याचक। अपराधों की क्षमा मांगत। फ़ौरन आते आवो कृपाकर। प्रसन्न होकर दर्शन दें।।३९।।
- कृपा करो हमपर। रहो तुम्हारा अस्तित्व घरद्वार पर। दुःख दारिद्र्य का नाश कर। रखो सुखी सभी को।।४०।।
- प्राप्ती हो संपत्ति की। कभी न आओ विपत्ति। दीर्घायुषी हो संतति। किस्मत हमारा रोशन करें।।४१।।
- महामाये जगन्माते। शंख, चक्र, गदा हस्ते। कमलासने सुरपूजिते। लक्ष्मीदेव्यै नमोस्तुते।।४२।।
- ऐसे करो प्रार्थना। साष्टांग करो वंदना। करो साकार मनोकामना। व्रत ऐसे होते से ही।।४३।।
- कुछ न खाएं दिनभर। सिर्फ़ सेवन दुग्ध फलोंका आहार। धन्य धन्य करें बारंबार। पवित्र नाम श्रीलक्ष्मी का।।४४।।
- सायं समय करो गो पूजन। महा नैवेद्य करो उसे अर्पण। फिर करो भोजन स्वयं। प्रमुदित होकर परिवार सह।।४५।।
- दूसरे दिन ताम्रकलश जल। मिला दें कूप या नदी के जल। पांच टहनियां निवास के स्थल। एक एक ऐसी रख दें।।४६।।
- अनन्तर वापस घर लौटकर। पूजा की जिस स्थली पर। हल्दी कुमकुम वहां लगाकर। भावुकता से वंदन करें।।४७।।
- यह सुनकर दासी का मन खुश हो गया। बोली मैंने बहुत कष्ट दिया। मुझ पर क्रोधित न हो महामाया। क्षमा करो मुझे।।४८।।
- अभी जाती हूं रानी के पास। देती हूं तुम्हारा संदेश। ठहरो तुम यहां अल्पकाल। अभी ही रानी आयेगी।।४९।।
- लेकिन उस क्षुद्र रानी को। वैभव से गर्वित रानी को। वह समझ गई संदेश को। मिजाज़ में तब आ गई।।५०।।
- ओ बूढ़े, वह बोली। क्यों आई इस स्थली। कोई भी न सुने तुम्हारी बोली। भाग यहां से तुरंत।।५१।।

- लक्ष्मी रानी से बोली। तू वैभव से बनी मतवाली। बन गई है उद्दाम उन्मत्तशाली। विस्मरण तुझे गतकाल का।।५२।।
- आज का यह शुभ दिन। लक्ष्मी का है यह ज्ञान। किया तूने मेरा अपमान। फलप्राप्ति इसकी हो जाएगी।।५३।।
- यह सुनकर शाप वचन। रानी हो गई क्रोधायमान। वृद्धा को किया मारपिटन। बकवास बोल बोल के।।५४।।
- वृद्धारूपी माता लक्ष्मी। मन ही मन में सोचने लगी। पल भर भी न रुकना यहां। तुरंत गमन करें स्वस्थानी।।५५।।
- लक्ष्मी निकली वहां से। शामबाला आई सामने से। बातचीत हो गई मिलने से। खुश किस्मती उस कन्या की।।५६।।
- लक्ष्मी से ही रानी की। राजकन्या को मिली खबरपाती। दुखित हुई सुनती सुनती। माफी उसकी उसने मांगी।।५७।।
- देखकर उस निष्पाप बाला को। दया आयी लक्ष्मीदेवी को। लक्ष्मीव्रत का पालन करें। कहने लगी वह उसे।।५८।।
- वह दिन था मार्गशीर्ष का। मास के प्रथम वृहस्पतिवार का। व्रत लक्ष्मी नारायण का। पूजा का याथाविधि पालन किया।।५९।।
- अंतिम वृहस्पति वार को ही। कृपा हुयी लक्ष्मी की उस पर ही। मनोकामनाएं सारी सारी। पूर्ण रूप से हो गयी।।६०।।
- राजा नाम सिध्देश्वर। पुत्र उसका मालाधर। राजकन्याको प्राप्त वह वर। मंगल शादी हो गयी।।६१।।
- वहां राजकन्या सुख में। रही दंपती आनंद में। लक्ष्मी कृपा की छाया में। प्राप्त उन्हें नित्य।।६२।।
- राजा भद्रश्रवा इधर। और रानी सुरतचंद्रिका पर। लक्ष्मी क्रोधित हुयी दोनों पर। फलतः दारिद्र की प्राप्ति उन दोनों को।।६३।।
- अत्यल्प काल में उनका राज्य गया। धन वैभव नष्ट हो गया। अठारह विश्व का दारिद्र आ गया। सुसीबतभी आ गयी खाने की।।६४।।
- जब होती अवकृपा लक्ष्मी की। तब न चलती किसी एक की। फलप्राप्ति उन्हें अपने कर्म की। भुगतनी पड़ती है।।६५।।
- इसलिए उस राजा- रानी को। दुःख भुगतना पड़ता है क्षण क्षण को। बुरी दशा रात दिन को। सूझता नहीं उन्हें अब क्या करें।।६६।।
- सोचा रानी ने। कह दिया पति को उसने। जामात है राजभवन में। अभी मदद उसकी मांगें।।६७।।
- उनके राजमंदिर में जाओ। दुर्दशा अपनी उन्हें बताओ। कथनसे उन्हें दयाशील बनाओ। धनप्राप्ति होगी अब उनसे ही।।६८।।
- रानी के उस कथनके अनुसार। राजा आया जामात - राज्य के भीतर। विश्राम के लिए बैठा पलभर। नदी के तीर अकेला।।६९।।

- राजगृह की कुछ सेविकाएं। आई पानी भरने के लिए। उन्होंने मुसाफिर को देख लिया। उन्होंने पूछताछ शुरू की।।७०।।
- कहां से आए आप भोले भाले। बताओ किसके कौन बोले। शुभनाम बताओ पहले। कथन करो सारी बातें हमें।।७१।।
- राजतेज विलसत उनके मुख पर। लेकिन हालत है बुरी तन पर। सत्य कथन करो सत्यवर। करो करो अभी अभी।।७२।।
- राजा ने सेविकाओं को। बता दिया अपने पूरे रिश्ते को। सुनकर अचरज लगा उनको। सभी भागी प्रासाद में।।७३।।
- प्रासाद में जाकर। सेविकाओं ने। खबर पहुंचाई पलभर में। पिताजी के आगमन में। सुनकर अचरज में गिरी वह शामबाला।।७४।।
- शामबाला ने क्या किया। मेनका दासी को बुलाया। वस्त्राभूषण के साथ भेज दिया। अपने पिता के स्वागतार्थ।।७५।।
- भद्रश्रवा का आगमन राजद्वार पर। हुआ उसका भव्य सत्कार। दास - दासी उनके दोनों कर। थे खड़े सेवा के लिए।।७६।।
- पञ्चपक्कवान का भोजन। और हो गया मनोरंजन। गीत वाद्य नर्तन। स्वागतार्थ सर्व सिद्ध।।७७।।
- वहां बेटी के साथ रहकर। वहां का सत्कार लेकर। राजा ने लौटने की दी खबर। अपने घर जाने की।।७८।।
- लौटते समय कन्या ने धन भर दिया हांडे में। बड़े प्रेम से दिया उसने। अपने पूज्य पिताजी को।।७९।।
- राजा को संतोष हुआ। धन लेकर घर आया। अपनी पत्नी से कह दिया। धन लाया है मैंने देखो।।८०।।
- खेलते ही हांडे को। अचरज लगा दोनों को। देखते विनाशप्राप्त हुआ द्रव्य का कोयला ही बन गया था द्रव्य का।।८१।।
- होकर गर्वित सुरतचंद्रिका ने किया था लक्ष्मी का अपमान। इसलिए पूर्ण पूर्ण रूप से हुआ उसका अकल्याण।।८२।।
- शामबाला थी लक्ष्मी भक्त। हुई नहीं थी उन्मत्त। उसके घर में भरा था वैभव वित्त। विपुल मात्रा में।।८३।।
- बन गयी सुरतचंद्रिका भिखारी। गयी बेटी के द्वार ऊपरी। बेटी सबों का कुशल आदरी। पूछने लगी माताजी से।।८४।।
- वंदन करके माताजी से। सत्कार किया सवहस्त से। गुरुवार के दिन प्रसन्नता से। मार्गशीर्ष मास के अंतिम का।।८५।।
- लक्ष्मी व्रतस्थ शामबाला ने। किया लक्ष्मी व्रत भावुकता से। आग्रह के साथ उसने अपनी माताजी से भी करवा लिया।।८६।।

- वहां कुछ दिन ठहर कर। सुरतचंद्रिका निकली अपने घर। लक्ष्मी व्रत करने पर। पुनश्च प्राप्ति उसे धन ऐश्वर्य की।।
८७।।
- ऐसे ही बीत गए कुछ दिन। शामबाला आ गयी मायका सदन। अनुभूति आ गयी उस भवन। स्तंभित हो गई बेचारी।।
८८।।
- धन के बजाय पिताजी को। कोयले ही दिए हाथ में उनके। रिक्त हस्त से अपने को भी भेजते। क्रोधित माताजी हो गई।।
८९।।
- इसलिए मायके में किसी ने पूछा भी नहीं शामबाला को। अपनी बेटी से मिलने भी नहीं आयी वह माता।।९०।।
- इतना होने पर भी शामबाला ने माताजी पर गुस्सा नहीं किया। तुरन्त चली आई स्वगृह में। उसी क्षण वहां से निकली।।
९१।।
- करते गमन समय। एक बात की उसने उस समय। नमक को बांध लिया जाते समय। और लौट आई स्वगृह को।।९२।।
- प्रासाद लौटने पर शामबाला से। पति ने पूछा पत्नी से। क्या लेकर आई तू वहां से। अपने मांजी के घर से।।९३।।
- शामबाला जवाब देती। राज्य का सार लाई हूं लेती। सुनता यह बात नवल से पति। अचरज में गिरकर वह।।९४।।
- वह बोला अपनी पत्नी को। बता दो वह चीज मुझको। सुनकर शामबाला बोली। जरा सब्र रखो।।९५।।
- शामबाला बोली बावर्ची को। नमक के बिना पदार्थ पकाने को। जब राजा बैठ गया भोजन को। वह चकित सा हो गया।।
९६।।
- इस पर शामबाला ने क्या किया। तश्तरी में कुछ नमक दिया। तब सब रूचिहिन पदार्थ। लगे तब खाने में अर्थ।।९७।।
- शामबाला बड़ी चतुर थी। राज्य का सार लाई थी। मन में करता है पति सोच विचार। उसे ही पट गया उसका उसका
विचार।।९८।।
- बाद उन दोनों ने ही। लक्ष्मी का स्मरण किया। फिर भोजन किया आनंद से। दंपत्ति रहने लगी सुख शान्ति से।।९९।।
- संक्षेप में यह लक्ष्मी व्रत। शीघ्र फल देने वाला नित्य। जो करें जीवन में श्रद्धा युक्त। सचमुच आनंद उसे प्राप्त।।१००।।
- प्राप्त होगी उसे सुख समृद्धि। धन धान्य की होगी वृद्धि। ऐसी इस व्रत की प्रसिद्धि। रहेगी इस त्रिभुवन में।।१०१।।
- स्त्री - पुरुष भावुक भक्त। जो करेंगे मेरा लक्ष्मी व्रत। उसे रखूंगी मैं वैभवप्रत। सत्य सत्य है वाणी यह।।१०२।।
- ऐसी यह बात साक्षात् लक्ष्मी ने। बताई है स्वमुख से उसने। विस्तार से श्री पद्म पुराण कथा में। वहां वर्णित है पूर्ण रूप
से।।१०३।।

- धनधान्य की प्राप्ति के लिए। सब सुख सौख्य प्राप्ति के लिए। मनोवांछित पूर्ति के लिए। लक्ष्मी व्रत का पालन करो।। १०४।।
- भावभक्ति से करें लक्ष्मी पूजन। यह महात्म्य करें पठन। अथवा करें श्रवण। फलप्राप्ति इससे निश्चित।। १०५।।
- ऐसे यह महालक्ष्मी व्रत करने से। आइन्दा हर गुरुवार को ही करने से। दिन में एक समय यह पढ़ने से। अवश्य महालक्ष्मी प्रसन्न होगी।। १०६।।
- जब महालक्ष्मी होगी प्रसन्न। देगी विपुल धनधान्य। ऐश्वर्य, भूमि, गृह और वाहन। प्राप्त होगा लक्ष्मी कृपा से।। १०७।।
- जब प्राप्ति होती वैभव की। गर्वित न हो कभी। नम्रता से उसी संकल्प दिनी। करो करो लक्ष्मी व्रत।। १०८।।
- स्वयं व्रत का करो पालन। आपस -रिश्तेदारों से भी करो कथन। उनसे भी करो यह व्रत का पालन। धन प्राप्ति सभी को हो जाएगी।। १०९।।
- ऐसे लक्ष्मी व्रत का महिमान। मिलिंद माधव ने किया कथन। इसलिए करो अभी नमन। " ॐ श्रीलक्ष्मीभ्यो नमः"।। ११०।।
- यह महामंत्र लक्ष्मी प्राप्ति का। साक्षात् संकल्प सिद्धि का। इसलिए इस जप का। सर्वदा पठन नित्य नित्य।। १११।।
- शके अठराहासो चौत्र्यान्त्रवे। कार्तिक शुक्ल पक्ष में। वैकुण्ठ चतुर्दशी के सुदिने। यह ग्रंथ पूर्ण साकार।। ११२।।

शुभं भवतु।। ॐ विं श्री लक्ष्मीभ्यो नमः।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।
 ।। श्री महालक्ष्मी देवतार्पणमस्तु ।।

।। ॐ श्री लक्ष्मी देव्यै नमः ।।

श्री लक्ष्मी नमनाष्टक	।। श्री लक्ष्मी देवी की आरती ।।
नमस्कार महामाये, जगन्माते परात्परे ।।	जय लक्ष्मी माता, जय जय लक्ष्मी माता ।
शंख चक्र गदा हस्ते, लक्ष्मीमाते नमोस्तुते ।।१।।	तुमको निशदिन सेवत हर विष्णु विधाता ।।
आदि नहीं अंत नहीं, आद्य शक्ति सचमुच तू ।।	ब्रह्माणी रूद्राणी तू ही जगमाता ।
विश्वाधारे विष्णुकान्ते, लक्ष्मीमाते नमोस्तुते ।।२।।	सूर्य चंद्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता ।।
सर्व व्यापी सर्व साक्षी, शुद्धसत्त्वस्वरूपिणी ।।	दुर्गा रूप निरंजनी सुख सम्पत्ति दाता ।
सर्वज्ञे सिन्धु संभूते, लक्ष्मीमाते नमोस्तुते ।।३।।	जो कोई तुमको ध्याता ऋद्धि सिद्धि पाता ।।
कमले कमलनेत्रे कोमले कमालासने ।।	तू पाताल बसंती, तू ही शुभ दाता ।
मंगले मुदिते मग्धे, लक्ष्मीमाते नमोस्तुते ।।४।।	कर्म प्रभाव प्रकाशक जगनिधि की त्राता ।।
शुभवस्त्रधारिणी हे, गरुडध्वजभामिनी ।।	जिस घर थारो वासा ताहि में गुण आता ।
दिव्यालंकार भूषिते, लक्ष्मीमाते नमोस्तुते ।।५।।	कर न सके सोइ कर ले मन नहीं धड़काता ।।
सर्व दुःख हरे देवी, भुजंग शयनाने ।।	तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न कोई पाता ।
भगवती भाग्यदात्री, लक्ष्मीमाते नमोस्तुते ।।६।।	खान- पान का वैभव तुम बिन नहीं आता ।।
सिद्धिबुद्धि भुक्तिमुक्ति, संतति सुखसंपदा ।।	शुभ गुण सुन्दर युक्ता क्षीरोदधि जाता ।
आयुरारोग्यही देनेवाली, लक्ष्मीमाते नमोस्तुते ।।७।।	रत्न चतुर्दिश ताको कोई नहीं पाता ।।
नमोनमः महालक्ष्मी, धनवैभवदायके ।।	श्री लक्ष्मी जी की आरती जो कोई गाता ।
दैन्य हमारे दूर करो, प्रार्थी मिलिंद माधव ।।८।।	उर उमंग अति उपजे पाप उतर जाता ।।
पठन - श्रवण भावे नित्य करे नामनाष्टक ।।	स्थिर चर जगत रचाये शुभ कर्मन लाता ।
मनोकामना प्राप्त हो, सत्य श्रद्धायुक्त भावुका ।।९।।	तेरा भक्त मैयाजी शुभ दृष्टि पाता ।।